क़र्ज़ की ग़ज़ल

ओमपाल शर्मा

ग़ज़ल संग्रह

सम्पादकीय

शायर की भावनाओं का प्रतिबिम्ब या कहा जाये कि विचारों की अभिव्यक्ति ही ‘ ग़ज़ल ‘ है ।

कोई कल्पना भाव या विचार मष्तिक के किसी कोने से कागज पर उतरता है तो वास्तव में वह अपने आसपास के जीवन , प्रेम –विरह , प्रकृति सुन्दरता , दिली भावनाओं , को ही चित्रित करता है ।

मित्रों हम सभी के लिए ये एक हर्ष की बात है कि हमारी website साहित्यकारों रचनाकारों के विकास और सम्मान के लिए प्रतिबद्ध है । इसी दिशा में सभी नए और पुराने रचनाकारों की रचनाएँ प्रतिदिन website पर प्रकाशित कर उनकी भावनाओं को साहित्य प्रेमी पाठकों तक पहुचाया जाता है।

साहित्य साधना की दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए www.kavyasagar.com साहित्यकारों के संग्रह प्रकाशन को न्यूनतम लगत मात्र में E book का प्रकाशन अपनी वेबसाइट पर करने का निर्णय लिया है इसी क्रम में website पर कहानी संग्रह , काव्य संग्रह , ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित किया जाना प्रस्तावित है।

रचानाकरारों और पाठकों का सहयोग सादर अपेक्षित है ।

प्रबन्ध समिति ,

www.kavyasagar.com

कवि परिचय

नाम	श्री ओमपाल शर्मा
पिता	श्री राजपाल शर्मा
पता	मौहल्ला उपाध्याय गाँव पोस्ट खैर जिला 0 अलीगढ़ यूपी पिन 202138
जन्म तिथि	(10/10/1987)
शिक्षा व् जीवन	आप ने हाई स्कूल और फिटर से आईटीआई किया और आप फुटवाल के आगरा मण्डल और जिला स्तरीय खिलाड़ी भी रहें है । जब आप को अब को अपनी जेब खर्च के लिए नोकरी करनी पड़ी तब आप ने घर से दूर रह कर आप ने टेम्परेली बेस पर पहले नोयडा(यूपी) फिर नासिक (महाराष्ट्र) फिर गुजरात के शरह बड़ौदा फिर आप को उत्तरांचल के शहर रुद्रपुर में भेज दिया गया कुछ समय पश्चात आप के कार्य से प्रभावित होकर आप को चेन्नई तमिलनाडु में आप की कम्पनी ने आप को स्थायी नोंकरी देते हुए भेज दिया था अभी साढ़े पाँच साल से अधिक समय से आप चेन्नई में ही कार्यरत है ।आप को चेन्नई की तन्हाईयां ने और घर से दूर रहने के विरह ने कलम उठाने पर विवश कर दिया

और आप ने 2015 से लिखना शुरू करदिया है जिसमें आप मुख्यतः गीत गजल और हिन्दी छंद व् दोहे आदि लिखते है ।जो ओज और श्रग़ार में देश भक्ति से ओत प्रोत होते है और प्रेम की भावनाओ से भरे होते है । आपको दो अधिक मंच नही मिला फिर भी आप निरन्तर लिखते रहे ।आप दो वार सम्मानित किया गया जिसमें तमिलनाडु साहित्य अकादमी चेन्नई और एस आर एम यूनिवर्षिटीय चेन्नई (तमिलनाडु)

Mob No 91 8940736827

पिता है रूप शिव का ये , भवानी मात है जननी |

गजल

जवानी रुक नहीं सकती ,कभी तेरी यंहा होकर |
बुला लेगी तुझे भी वो ,लगाकर मौत की ठोकर ||

बड़ा तुम गर्व करते हो , जनी दो चार संताने |
सभी दो रोज में विसरै , कि गंगा घाट पर रोकर ||

बुढ़ापा दौर आएगा , दगा कर बच नहीं सकते |
कमर आये लचकपन में ,रहोगे मान सब खोकर ||

पिता है रूप शिव का ये , भवानी मात है जननी |
तमन्ना हो अगर जन्नत पियो पग रोज तुम धोकर ||

न तरुडाई लड़कपन कर ,जरा सा जाग जा प्यारे |
वुजुर्गो की करो इज्जत, चलो मेवा ज़मी बोकर ||

मुझे वो मिल नही पाया

जिसे माँगा दुआओं में , मुझे क्यों मिल नही पाया |1
जिसे सींचा फिजाओं में ,चमन क्यों खिल नहीं पाया ||

भला क्या दुश्मनी मुझसे , तुम्हारी थी मिरे रब्बा |2
फटी ऐसी न थी चादर , जिसे तू सिल नही पाया ||

इबादत नेक की अक्सर ,यही है क्या खता बतला |3
पुकारा जब मुसीबत थी , मगर तू हिल नही पाया ||

लगाये लाख मरहम हम , दिये गम जख्म अपनों ने |4
सहूँगा यूँ उन्हें कब तक ,बजर का दिल नही पाया ||

बना मीठा ज़माने को , उठा कर बोझ रिश्तों का |5
खुदा से बन्दगी कर नेक , में मुश्किल नही पाया ||

गजल का सार तुम ही हो

तुम्ही मेरी सनम कागज ,कलम का खार तुम ही हो ।1
तुम्ही मेरी सनम मुक्तक , गजल का सार तुम ही हो ।।

समाकर तुम कलम मेरी ,उभर आती गजल बनकर।2
तुम्ही मिसरा तुम्ही मक़्ता , शबद भार तुम ही हो ।।

बफ़ा करके सदा रोया , ज़मी तेरा कहाँ खोया 3
बहाता अस्क रातो को , दिया उपहार तुम ही हो ।।

मुझे सब पूछते अक्सर , छुपाया नाम क्या अस्तर ।4
बता दूं गर कयामत हो , सुनो हक दार तुम ही हो ।।

मुहब्बत ओम को ऐसे , हुयी क्यों आज ये कैसे ।5
मुझे सब लोग कहते अब , यहाँ खुद्दार तुम ही हो ।।

सुकर्मो के प्रभावो से

उदासी को कभी खुद पर , न हावी आप होने दो |
नही वश क्रोध होकर के , न आपा आप खोने दो ||

बिगाडै काम सब बनते ,पतन की ये निशानी है |
कभी मन क्रोध को अपने ,न अपना बीज बोने दो ||

न गैरों पर कभी आता , इसे अपने दिलाते हैं |
कभी मन प्रेम माला में , न मोती क्रोध पोने दो ||

मुहब्बत जब करो प्यारो , वफादारी जिगर में हो |
जगा गैरत हमेशा फिर , न उसको आप सोने दो ||

दिलाये क्रोध जब कोई , करो गिनती शुरू उलटी |
बनी जो हाथ की रेखा,नयन कुछ क्षण भिगोने दो ||

तम्हारे बाद में अक्सर , करें चर्चा बुराई पर |
तुम्हारे पाप धोते है , न रोको आप धोने दो ||

बढ़ाओ नाम को आगे , सुकर्मो के प्रभावो से |
कुकर्मो को पड़ा कोने , जहॉ में ओम रोने दो ||

लवों से गर मिटा भी दो दिलों पर नाम मेरा है |1
मुझे कर याद रो दोगे ,पड़े जब काम मेरा है||

बडा कमजोर शीशा हूँ,रहा में मयकदौ अब तक |2
मिटाना आशिकों के गेम ,पिलाकर जाम मेरा है ||

बड़े पथ्थर रखे दिल पर ,सहे है गम जमाने के |3
वफ़ा जो की नही किस्सा सनम वो आम मेरा है ||

यहाँ कीमत किसी ने भी,जरा परखी अगर होती |4
उसे ही तो समझ आता ,कि कितना दाम मेरा है ||

कलम कर थाम ली मैंने ,लिखेगी गम ज़माने के |5
बडा खुद्दार लिखती है , खिंचे तन चाम मेरा है ||

यही वो चीखके कहती कलम करती बगाबत जब|6
न राधा का न मीरा का , सुनो बस श्याम मेरा है ||

अभी में रुक नही सकता , बिछड़ना है जमाने से |7
मुझे गीता कहे नित दिन ,वहाँ बस राम मेरा है ||

मिला मैं ओम जब खुद से,लगा सारा जहाँ नश्वर |8
पता मेरा मिला मुझको ,कहाँ पर धाम मेरा है ||

रही किस्स्मत तिरी फूटी ,अगर मै मिल नहीं पाया |
दिखे सब घाव भी गहरे, मगर में सिल नहीं पाया ||

करो ऐसी तपस्या अब , मिलू हर वार जीवन में |
लगाने घाव पर मरहम ,भला क्यों हिल नहीं पाया ||

पिघलता मोम सा पत्थर,अगर हो दम मुहब्बत में |
भले पत्तर रहें मूरत , न पिघले दिल नहीं पाया ||

कमल के फूल तो यारो ,खिला करते यहाँ कीचड़ |
बहारों थी बसंतो में ,कसम से खिल नही पाया ||

तराने खूब लिखता हूँ , मुहब्बत के फ़साने भी |
जमाना ओम को सुनता मगर महफिल नही पाया ||

गजल ले कर्ज लिखता हूँ

लगूँ सायर जमाने को ,खुदी के मर्ज लिखता हूँ |1
दिलो से पूछ कर दिल के ,हमेशा दर्द लिखता हूँ ||

तुझे मंजूर करना है , सनम मेरी मुहब्बत को |2
कलम को हाथ लेकर में यही बस अर्ज लिखता हूँ ||

निभाना साथ है तुमको अगर ये सात जन्मों तक |3
यही दिल से निभाने है , पढ़ो में फ़र्ज लिखता हूँ ||

कहे वो हम सफर मुझको,चुराया चैन भी दिल का |4
करी जो बेवफाई है , उसे वे हर्ज लिखता हूँ ||

उसे तो बस दिखाई दे ,लिखा जो ओम कागज पर |3
उसी के दर्द अपना कर ,गजल ले कर्ज़ लिखता हूँ ||

क्यों सताते हो हमें जब पास आना ही नहीं |1
क्यों जताते आप अपना खास माना ही नहीं ||

आप को लिखते रहें हम फायदा है क्या भला |2
अब तराना क्यों लिखे जब साथ गाना ही नही ||

रो पड़ेगा आसमा भी , बेबफाई गर लिखू 3
पेड़ हम वो क्यों लगाये आम आना ही नहीं ||

ताज अब तक है सुशोभित आप पहनाये हमें |4
क्यों हुए बदनाम अब तक राज जाना ही नहीं ||

हो रहें है आज फिर से क्यों क्यों दो एक बदन |5
अब मिले मंजिल हमारी ओम पाना ही नहीं ||

गजल का वो तराना हूँ

जिसे तुम गा नही पाये ,गजल का वो तराना हूँ |1
जरा सोचो तुम्हारा में , वही गुजरा जमाना हूँ ||

गये है भूल वो मुझको नही हूँ याद अब उनको |2
लवों तक आ नही पाया,मुहब्बत का फ़साना हूँ ||

जिसे सब चाहते रहते ,मगर होता नही हासिल |3
खुदा जो बोल कर टाले ,वही सुंदर बहाना हूँ ||

नही रुकते कदम मेरे ,कहें है वक्त सब मुझको |4
लड़ा जो मुश्किलो से है , वही हिन्दू घराना हूँ ||

लिखे दो शब्द कागज पर,धुँआ देखो लगा उठने |5
मुहब्बत ही सदा लिखता, मुहब्बत का दिवाना हूँ ||

यहाँ सब ओम को जानें ,रहे मजहब भला कोई |6
कुरानों की लिखावट हूँ , महाभारत सुहाना हूँ ||

नही गर रावता मुझसे ,
मुझे फिर क्यों सताती हो |
रखा दिल में तुझे जिसने ,
उसे ही क्यों लजाती हो ||

मुझे काठा मुहब्बत सर्प
तो फिर क्यों सनम मेरे |
भिगो कर अश्क से आँचल ,
कबर पर क्यों सुखाती हो ||

मुझे जब भूल बैठी तुम ,
लगी आने गरीबी जब |
सनम मुफ़लिश न पहचाना ,
अभी अपना जताती हो ||

सनम मेरी अगर तुझको ,
मुहब्बत गर नही भाती |
पनाहों में हमारी तुम ,
चली क्यों रोज आती हो ||

गजल मेरी मुकम्बल थी ,
उसे क्यों गा नही पाई |
सजाया ओम ने उसको ,
जिसे अपना बताती हो ||

जान अपनी तुम्हें बनाएंगे |1
पास जो है सभी लुटाएंगे ||

पास आओ जरा सनम मेरे |2
प्यार क्या है तुम्हें सिखाएंगे ||

वक्त बिकता कहाँ बताओ तो |3
कर्ज ले खास पास आएंगे ||

खोज के थक लिया जमाने में |4
आप अब क्या हमें बताएंगे ||

माल है अब अजीज जीवन में |5
ओम दिल लोग क्यों बसायेंगे ||

हमें बस मुस्कराना है

नहीं रुकना मिरे यारा ,अभी तो दूर जाना है |
अभी रस्ता अधूरा है,नही मंजिल ठिकाना है ||

जमाना सोचता है क्या, नही है रावता सच में |
लगे पग लाख कांटे हों,हमें बस मुस्कराना है ||

भले दो जिस्म है अपने,जुदाई हो नही सकती |
न मुझसे आप रुठोगी,नहीं मुझको मनाना है ||

कभी थे अजनवी दोंनों,अभी हम एक हो बैठे |
जमाने को सुनाने को ,तराना साथ गाना है ||

गले सबके लगाकर गम सजाकर के दिखाने को |
पहुँचाना हैं वहाँ लेकर,जहाँ रब का ठिकाना है ||

लगाई होड़ दुनिया ने,नही होना हमें शामिल |
रहेंगे साथ मिलकर हम,नही लड़ना लड़ाना है||

मिरी मजबूत बाँहो में ,सुनो महफूज हो यारा |
कहे अब ओम डंके से ,बना रिश्ता निभाना है ||

दिल का भार लिखता हूँ

कभी मैं जीत लिखता हूँ , कभी मैं हार लिखता हूँ |1
कभी अच्छा अगर लिखता ,कभी बेकार लिखता हूँ||

दिए जो गम जमाने ने ,खिलाई वक्त ने ठोकर |2
दिया ऐसा नसीबा जो उसे सरकार लिखता हूँ ||

समझने को भला है क्या यहां सुख-दुख जमाने में |3
सही तकलीफ है मैंने , उन्है हरबार लिखता हूँ ||

पनपने दी नही नफरत ,चुकाया कर्ज मिट्टी का |4
भरा है दर्द सीने में , उसी का भार लिखता हूँ ||

लगाओ दिल अगर अपना,पता उसका लगा लेना |5
कहीँ धोखा न खा जाना,लुटा सब प्यार लिखता हूँ ||

मिला अब जान से अपनी, उसे सब मौत कहते हो |6
उसे भी प्यार से लोगो ,गजल उपहार लिखता हूँ ||

भटकता क्यों जमाने में , मुझे कोई न बतलाये |7
पढ़ा जो ओम ने अब तक ,उसी का सार लिखता हूँ ||

ऐ मेरे अधूरे चाँद

घटाओं में छुपे रहना मुझे बिल्कुल न भाता है |1
समाये क्यों फिजाओ मैं समझ मुझको न आता है ||

अगर हो चाँद तुम मेरे बताओ यह जरा मुझको |2
तडपती सर्द रातों में मुझे यूँ क्यूँ सताता है ||

तुझे गर सुर्ख नजरों से अगर मैं आसमा देखूँ |3
हिलाकर साख अपनी ये दरख्ता दिल जलाता है ||

जहाँ तक ये नजर जाती,वहाँ तक अश्क तेरे हैं |4
समुन्दर पीर का पीकर , अभी क्यों मुस्कुराता है ||

किसी की याद में ऐ ओम, सुन ये चाँद निकला है |5
अमावस की अँधेरी में ,बिरह के गीत गाता है ||

तराना साथ गाएंगें

मुहब्बत राह अपनाई ,
कदम पीछे न जाएँगे |1)
सनम गुजरे जमाने जो ,
कभी बापस न आएँगे ||

नही मजबूर हम दोनों ,
यही वादा करें खुद से |2)
यहाँ क़समें मुहब्बत की ,
कभी झूठी न खाएँगे ||

निभाना साथ है हमको ,
भले बंदिश जमाने की |3)
मगर जब ठान हमने ली,
हमें क्या रोक पाएँगे ||

हमारा साथ गर दोगे,
कसम अपने खुदा की है |4)
सभी बंधन जहाँ तजकर,
बना रिश्ता निभाएँगे ||

गजल अपनी बयाँकर ओम
किस्से लिख मुहब्बत के |5)
जरा अपने मिला तो स्वर
तराने साथ गाएँगे ||

घर हमारे क्यों अँधेरे रह गए

गम नही करना हमें वो कह गये |
नीर फिर अपने नयन से बह गये ||1

साथ हम उनके चले जो दो कदम |
लाख गम उन दो कदम मै सह गये ||2

इक नजर में दिल , गवाँ बैठे सनम |
आप ही दिल के दरीचे, तह गये ||3

आज तक हमने बसाये जो शहर |
दौर मुफलिस गर्दिशों में ढह गये ||4

ओम् ने चाही सभी को रोशनी |
घर हमारे क्यों अँधेरे रह गये ||5

गजल के भाव देखो तुम ,

गजल के भाव देखो तुम , जरा उसकी बहर देखो |
लगी है आग मजहब की , लगे जलने *शहर देखो (1)

बुझा क्या आप पायेंगे , हमारे आग शहरों की |
खुदी सड़कें यहाँ सारी , सभी सूखी नहर देखो (2)

नही है बांध नहरों पर , दरख़्तों को जमी तरसे |
क़यामत खुद बुलाते है , कहें कुदरत *कहर देखो (3)

न भरता पेट रोटी से , लगी है भूख दौलत की |
बिके है अंग चोरी से , दबाओं में *जहर देखो (4)

नही ऐसा दिवस कोई , यहाँ लुटती न हो इज्जत |
बड़ा इंसान जालिम है , धरा कलयुग *पहर देखो (5)

सहा मुझसे नही जाता , चलेगा ये सफर कब तक |
फँसी है ओम् की कश्ती , समुन्दर की लहर *देखो (6)

यहाँ हम भी वहाँ तुम भी,जगे क्यों रात को बोलो |
अगर कोई जरा सा इल्म , है तो राज को खोलो ||

हमारी इस मुहब्बत को , समझ पाये जरा भी गर |
न दौलत के तराजू पर , तनिक भी यूँ इसे तोलो ||

नही महफ़िल रहे सूनी , हमारे औ तुम्हारे बिन |
जरा सा हम इधर होते ,तनिक सा तुम उधर हो लो ||

जमाना तो गया सोने , चले अब आप भी जाओ |
जरा सा हम भी सोते है,तनिक सा आप भी सो लो ||

बनी रचना गजल की अब ,बहर भी है तरन्नुम में |
बना धागा मुहब्बत का , कि मोती प्रेम का पो लो ||

स्वरो को हम पिरोये है ,कभी हँसकर कभी रोकर |
उमर भर ओम ही रोया,कभी कर याद तुम रो लो ||

दोस्तों एक मेरी दोस्त को बड़ी मुश्किल आ गई पारवारिक किसी की
गलत काल के चलते दुआ करना सब ठीक हो ।
जय माता दी

रहे वो खुस सदा भगवन , मुझे हँसना सिखाई वो ।
गमौ से दूर ले जा कर, चमन खुशियां दिखाई वो ।।

रहा था दंश सहकर में , दिये थे जो मुझे अपने ।
निकाले दंश सब उसने , दवा भी है लगाई वो ।।

उसी के आज जीवन में , गमौ ने घर बना डाला ।
रहूं फिर आज चुप कैसे , खुसी प्याला पिलाई वो ।।

ख़तम करने चली खुद को, वफ़ा दे जब जफ़ा पाई ।
कफ़न भी नाम मेरा लिख ,खुदी को है सिलाई वो।।

कहानी एक माँ की है , लुटा सब कुछ दिया घर पर ।
गुनाहो के पुलन्दे सर , किये ना पर उठाई वो ।।

बिगाड़ा घर रक़ीबा बन , नही आबाद रह सकता ।
जमी दोजक बने उसको , करें बस ये दुहाई वो ।।

मनीषा थी बड़ी खुश दिल ,सभी को ही हँसाया था ।
उमर भर ओम कैसे अब , सहेगी गम जुदाई वो ।।

ओम को ऐ यार , बस भरपूर करनी है ||

उदासी ये तुम्हारी अब , हमें ही दूर करनी है |1
तुम्हें खुशियो दीलाने को , दुआ भरपूर करनी है ||

भुलाना या हमें साजन,उमर भर याद करना तुम |2
हमें तो बस वफ़ा से तू ,जहॉ मशहूर करनी है ||

भुला तुझको नही सकता,अभी सारी उमरिया में |3
तुम्हारी याद में ये जिंदगी अब चूर करनी है ||

चली आओ हकीकत में ,भले ख्वावों पुकारा है |4
नही आई कयामत तक , सजा मंजूर करनी है ||

सजा तुमको मिलेगी अब , हमारे साथ रहने की |5
मुहब्बत ओम को ऐ यार बस भरपूर करनी है ||

दिन कयामत पास जल्दी , ओम तेरे आ रहे ||

भूख नफरत की मिटाकर,ये कहाँ हम जा रहे |1
दौर मुफलिस चल रहा जो,गर्दिशो को भा रहे ||

लाख चाहें देश में ये, अब न हमले हो यहाँ |2
स्वेत पे ये रंग काले ,बादलों से छा रहे ||

मात रोती भारती निज , आसुओ की बाढ़ है |3
धर्म नंगा हो रहा वो , गीत फ़िल्मी गा रहे ||

ओढ़ मरते मारते है , राज नीती चादरें |4
मौज नेता ले रहे बस , होटलों का खा रहें ||

आपसे है आरजू बस ,ये कलम लिखती चले |5
दिन कयामत पास जल्दी , ओम तेरे आ रहे ||

खिलाई वक्त ने ठोकर |

मेरे साथ जो कुछ हुआ एक दौर था गुजर गया आज आप सब की दुआ है संपन्न हूँ सक्षम हूँ लेकिन एक वो समय भी रहा है जब में नोयडा में एक बार भूखा सोया था एक रात पैसे नही थे कल क्या होगा पता नही था और बन्द दुकानों के लेन्टरो पर सोकर 13 रात गुजारी है मैने घर से कुछ km होने पर कभी सहारा लिया किसी का भी ।नही भूल सकता वो फ़रवरी की ठण्ड से लड़कर जो रातें काटी है ।अपने दर्द को लिखने का साहस किया आप की एक नजर चाहूँगा

मुझे सब याद है अब भी ,खिलाई वक्त ने *ठोकर |
नही मेरा हुआ कोई ,सभी के हम रहे *होकर ||1

निभाई साथ उलफ़त जो ,रहीं हमदम सदा बनकर |
अगन जब मिट नही पाई ,उठे भूखें ज़मी *सोकर ||2

मगर है नाम मेहनत का बरक्कत भी सुना मैने |
पिया हर रोज में आंशू ,कभी हँसकर कभी *रोकर ||3

बताया जो बुजुर्गो ने , अमल हर बात मैंने ली |
मुसीबत जेब मे रख ली ,रमी का हो मिला *जोकर ||4

अभी भी ख्वाइशें मेरी ,नही मंजिल तलक पहुँची |
तमन्ना है चला जाऊँ जहाँ से पाप खुद* धोकर||5

बिझाकर सेज फूलों की,हमें तुम कब सुलाओगे |

मेरी उमंग

उमंगें आज भी बाकि,कभी तो लौट आओगे |1
करोगे प्यार तुम हमको,गले अपने लगाओगे ||

मगर बदला हमारा वक़्त,बदले आप के तेवर |2
अभी उम्मीद बाकी है,नही अब तुम रुलाओगे ||

रही सूखी जमी अपनी,मगर हम खिल खिलाते है |3
तरन्नुम में लिखें जज्बात,समझ कब आप पाओगे ||

नहीं लिखता अगन अपनी,कहीं डर लौट ना जाओ |4
लिखूँ में प्यार कागज पर,कभी तो खिल खिलाओगे ||

चली आओ अरे सजनी ,पुकारे ओम सदियों से |5
बिछाकर सेज फूलों की,हमें तुम कब सुलाओगे ||

अच्छे दिन आने वाले है

हम तिमिर हटाने वाले है |
अच्छे दिन आने वाले है ||

कोई राह रोक ना पाये |
संसार मै छाने वाले है ||

देश सजाया जो सपने वो|
सब पूरे होने वाले है ||

महनत कर भी भूखे सोते |
हम उनको गाने वाले है ||

हम लोग राष्ट की खातिर |
ये जान लुटाने वाले है ||

झूमो नाचो आज आप तो |
सबके मन भाने वाले है ||

काश देश हो सपना पूरा |
हम हाथ बढ़ाने वाले है ||

ओम् भरे हुँकार देश हित |
कल को सब आने वाले है||

हम तिमिर हटाने वाले है |
अच्छे दिन आने वाले है ||

मुझे करना जहाँ में सब ,बड़ा आसान लगता है ।

आसान लगता है

मुझे करना जहाँ में सब,बड़ा आसान लगता है ।
मुझे ये देश मेरा अब,मुझे मेरी जान लगता है ।।

लूटा दूँ प्राण अपने कब,लवों को खोलकर बोलो ।
निराला देश दुनिया में , हिन्दुस्तान लगता है ।।

वतन को राह पर लाना,हमारा काम बन जाता ।
लुटाना प्राण हँसकर के मुझे तो शान लगता है ।।

यहाँ कुछ लोग ऐसे है,बिकें जो चंद सिक्को पे ।
कहूँ सच में सभी का ही,गिरा ईमान लगता है ।।

मुहब्बत काम इंशानी ,उसे ही भूल बैठा वो ।
उगाकर पेड़ नफ़रत के ,बताने पान लगता है ।।

सुनो ऐ ओम भू पर हम, चमन फिर से उगा लेंगे ।
करेगा रब सभी पर ही मुझे अहसान लगता है ।।

ऊपर बाले की भी कुछ,मजबूरी होती है ।

ऊपर बाले की भी कुछ
मजबूरी होती है ।
तभी खुदा की बन्दों से
कुछ दूरी होती है ।।

मांग कभी ना रखो कहीं
जो पूरी ही ना हो ।
बिन मांगे वह देता
जहां जरूरी होती है ।।

बिना कहे भरता खुशियो
से खाली झोली वो ।
रजा ना ले तुझसे
उसकी मजूरी होती है ।।

लाख नहा लो तुम चाहे
अब गंगा कावेरी ।
बिन सद्कर्मों के ये
सभी अधूरी होती है ।।

कहो ओम कान्हा कान्हा
तुम या राधा राधा ।
ये जोड़ी कब इक दूजे
बिन पूरी होती है ।।

कहे चूड़ी सुने कगंना हमें तो साथ रहना है ।

कहे चूड़ी सुने कगंना हमें तो साथ रहना है ।
सता ले लाख ये दुनिया हमें तो साथ सहना है ।।

पढ़ाना है मुहब्बत का हमें अब पाठ दुनिया को ।
मिलाकर स्वर मे स्वर यूं ही हमें तो साथ कहना है ।।

न लाओ आग नफरत की हमारे इस घराने में ।
हमें आता यंहा केवल मुहब्बत साथ बहना है

सजाओ प्यार से इसको लगे दुल्हन सुहानी सी ।
हरी चूड़ी चुनरिया लाल सिन्दूरी औ गहना है ।।

लगे मुझको सुहाना सब ,सजा ले अंग जो गोरी ।
कहूँ क्या आज अब तुमसे, न बाकी जो न पहना है

गजल लिखना न चाहा था मुझे वो याद

गजल लिखना न चाहा था मुझे वो याद लिखवाती 1
न सोचा था कि गाऊंगा हुआ बर्बाद लिखवाती

रहे हम कैद हो करके सदा उनके तवस्सुम में2
कलम मेरी हमेशा क्यों मुझे आजाद लिखवाती

सुने किस्से मुहब्बत यार मजनूँ और रांझा के 3
मुझे मेरा हि किस्सा ये कलम नासाद लिखवाती

नहीं मस्तक झुका मेरा रहा लड़ता जमाने से 4
शिखर पै वक्त बैठाकर अभी फ़रियाद लिखवाती

अभी भी देश लड़ता है , बचा लो ओम आगे आ 5
सभी बर्बाद हो बैठे , कलम आबाद लिखवाती

मगर महफिल नही पाया ||

गजल

रही किस्स्मत तिरी फूटी ,अगर मै मिल नहीं पाया |
दिखे सब घाव भी गहरे, मगर में सिल नहीं पाया ||

करो ऐसी तपस्या अब , मिलू हर वार जीवन में |
लगाने घाव पर मरहम ,भला क्यों हिल नहीं पाया ||

पिघलता मोम सा पत्थर,अगर हो दम मुहब्बत में |
भले पत्तर रहें मूरत , न पिघले दिल नहीं पाया ||

कमल के फूल तो यारो ,खिला करते यहाँ कीचड़ |
बहारों थी बसंतो में ,कसम से खिल नही पाया ||

तराने खूब लिखता हूँ , मुहब्बत के फ़साने भी |
जमाना ओम को सुनता मगर महफिल नही पाया ||

कहारों भूल मत जाओ

बेटी के बोल

कहारों भूल मत जाओ , मुझे महफूज जाना है |
सजन के साथ रहकर के , जुडा रिश्ता निभाना है ||

लड़कपन से अभी तक घर ,सवारा खूँ पसीने से |
चली अब छोड़ इसको जब,लगे आँगन सुहाना है ||

चुका कर्जा सभी पीहर अभी ससुराल का बाकी |
बना भोजन ससुर पति सास का करजा चुकाना है ||

लिया था जन्म मैंने जब, सुना घर वैभवी आई |
हुयी क्यों आज बेगानी , यही तुमको बताना है ||

नए रिश्ते बनेंगे अब , कही भावी कही चाची |
बनूँगी माँ बहू बीबी , चलन दुनिया चलाना हैं ||

कयामत वक्त अब यारों,बड़ा ही पास लगता है |

कुचलना फन हमें होगा

कयामत वक्त अब यारों , बड़ा ही पास लगता है |
बुलाता है इसे जो वो , हमारा खास लगता है ||

नहीं जिसको जला पाये ,अगन के ज्वार भाटा भी |
उसे अब राख कर देगी, चमन की घास लगता है ||

पिलाये दूध हम अक्सर , बसे आस्तीन सांपों को |
कुचलना फन हमें होगा, हुआ अहसास लगता है ||

हमारे घाव गहराये , इन्हीं अड़सठ बसंतों में |
हमें अब दर्द सहने का , हुआ अभ्यास लगता है ||

गजल बैठू अगर लिखने ,उभर कर दर्द आते है |
किसी को ओम की पीड़ा,न हो आभास लगता है ||

मुहब्बत लिख नही सकता,बिषैली

गजल

मुहब्बत लिख नही सकता , बिषैली इन बहारों में |
छिपे बैठे लुटेरे डोलियों के ,अब*कहारों में ||

अगर तुम साथ मेरा दो , समुन्दर में मुहब्बत के |
अरे दो चार क्या सुनलो, लुटा दूंगा हजारों में |2|

मिटा दो आज आकर तुम, अभी ये फासले खुद ही
खुदा तुमको बना कर मैं ,दिखाऊंगा नजारों में |3|

लिखी आबादिया हमने , मगर बर्बाद है हम तो |
बरसते उम्र निकली है , नही पानी पनारों में |4|

बसाया आप को दिल में,अभी तक आप हो रग रग |
मगर तुमने डुबोया जब,फँस गए हम किनारों में |5|

मिटा दूँ इस ज़माने से, निशा भी ओम् में खुद का |
जलाकर ख़ाक कर दे जो ,नही लक़डी बजारों में|6|

नही कोई यहाँ अपना ,पराये ही नजर आते |

गजल

नही कोई यहाँ अपना ,पराये ही नजर आते |
नही रुकते कभी भी ये,जमाने से गुजर जाते ||

नही कोई यहाँ समझा,अभी अनजान दुनिया है |
रहे जो वक्त गर मुठ्ठी,सिकन्दर वो किधर जाते ||

निभाने को सभी चाहें, यहाँ रिश्ते जमाने में |
मगर फिर बेवफाई के,चलाये क्यों शजर जाते ||

कहो जी आप हमसे मत ,बुरा तो हाल भी मेरा |
मगर बदनाम हो जाती,वहाँ दो दिन ठहर जाते ||

नही लिखते गजल कोई,हमें ये भूख लिखवाती |
उठाकर चार कपड़ो को ,कमाने क्यों शहर जाते

हमारे नेता जी

गजल

गए वादे सारे भूल , हमारे नेता जी ।1
चुभे है सीने में सूल , हमारे नेता जी ||

अभी संसद में घुस पैठ ,बड़ी है जोरौ पर |2
कहे काहै पकड़ौ तूल , हमारे नेता जी ||

करें कैसे अब वो याद,दिऐ सब वादों को |3
गए संसद का खा फूल , हमारे नेता जी ||

नही है जनता हकदार ,खजाने सरकारी |4
हमें समझाते है मूल , हमारे नेता जी ||

करें अब जनता बर्बाद , तुम्हारी सत्ता को |5
रहें क्यों तुम ज्यादा ऊल ,हमारे नेता जी ||

भुलाकर दौर गम के अब,ख़ुशी का भास करता हूँ ।

भुलाकर दौर गम के अब,ख़ुशी का भास करता हूँ ।
दिला देगी मुझे किस्मत , नही में आस करता हूँ ।।

करूँ महनत बदलने की , लिया जो हाथ में रेखा ।
बताया जो बुजुर्गो ने , वही अभ्यास करता हूँ ।।

दिले नाशाद क्या जाने , मुहब्बत के नशे में है ।
गमौ से में छुड़ा दामन , खुसी के पास करता हूँ ।।

चला घर से अकेला जब , अभी है कारवाँ अपने ।
हराकर मैं मुसीबत को , बड़ा उपहास करता हूँ ।।

सुरों के राग क्या होते , नही जानू अभी तक मैं ।
जहाँ महफ़िल लुटेरों हों , वहीँ में वास करता हूँ ।।

न रामा हूँ रमायण का , न कान्हा गोपियों का मैं ।
पिता की आस छोटी सी ,उसे माँ ख़ास करता हूँ ।।

बनाई दूरिया जिससे , उसे बेजार कहकर के ।
बड़ा ही ख़ास है वो ओम,अब आभास करता हूँ ।।

तुम्ही गंगा तुम्ही जमना

तुम्हारे फैसले सारे , बने किस्मत हमारी है |1
कभी हद पार तो होगी ,सितम की ये तुम्हारी है ||

मुझे मंजूर है सब कुछ , खुदा के फ़ैसले लगते |2
कहूँ कैसे तुम्हारे बिन , यहाँ सदियाँ गुजारी है ||

जपा है नाम तेरा मैं , गुरू के मन्त्र के जैसा |3
तुम्ही हो जिंदिगी मेरी, तुम्ही किस्मत निखारी है ||

अगर तुम साथ डौगी तो ,जमाना जीत जाऊंगा |4
तुम्हारे नाम की माला , मुझे लगती पियारी है ||

तुम्ही गंगा तुम्ही जमना, तुम्ही मेरी सरस प्यारी |5
तुम्ही वो नाम हो साजन , जिसे साँसें पुकारी है ||

न हो हासिल मुहब्बत में,किसी को भी वफ़ा यारो|6
दिवानों ने मुहब्बत में , हमेशा जान वारी है ||

तुम्ही हो ओम की गजलें,तुम्ही ऋंगार गीतों का |7
तुम्ही जुगुनू अंधेरौ मैं ,अमावस की उजारी है ||

चढ़ाकर ओम को सीढ़ी , गिराया यार करते है ||

जमाने की सचाई है

मिले तब से तभी से हम , तुम्ही से प्यार करते है |1
कभी आओ मिलें फिर से , नजर को चार करते है ||

हया वो याद है मुझको, दिखी नजरें मिली थी तब |2
हमें मंजूर है अब भी , नही इन कार करते है ||

समझ मुझको नही आता, यहाँ पर कौन है अपना |3
जिन्हें चाहूँ वहीँ अक्सर , जिगर पर वार करते है ||

जमाने की सचाई है , हकीकत है फसादौ की |4
रखें हो धन तिजोरी में , तुम्हें स्वीकार करते है ||

सुलाते सेज फूलों की,जिन्हें अपना समझकर हम |5
निकलता काम जीवन को,कसम से खार करते है ||

समझ मुझको सभी आता ,मुझे कोई न बतलाओ |6
जिलाते जिंदगी जिसको , वहीं दिल हार करते हैं ||

ज़मी से गर फलक जाओ, नजर नीचे सदा रखना |7
चढ़ाकर ओम को सीढ़ी , गिराया यार करते है ||

रहे परदेश मेरा तन , मगर मन गांव रहता है ।

रहे परदेश मेरा तन , मगर मन गांव रहता है |1
चलो अब लौट घर प्यारे,यही वो बात कहता है ||

तड़प कर बोलता हर दिन,नही माँ के यहाँ दर्शन |2
मिला करती मुझे विस्तर,नही कर चाय गहता है ||

उठो रे अब बजे है दस,तुम्हारी कब सुबह होगी |3
नही परदेश में रहकर, पिता की डाँट सहता है ||

रहे मन्दिर शिवा का या,अज़ानें मस्जिदों की सुन |4
विरह धुन संग मेरा मन ,शहर की ओर बहता है ||

सुबह से ही निकल पड़ना करें मस्ती सभी हिल मिल |
बनाया नीड़ बचपन में , अभी हर रोज ढहता है ||

घर हमारे क्यों अँधेरे रह गए

गजल

गम नही करना हमें वो कह गया |
नीर फिर अपने नयन से बह गया ||1

साथ हम उनके चले थे दो कदम |
लाख गम दिल दो कदम मै सह गया ||2

एक नजर में दिल , गवाँ बैठे सनम |
एक तू दिल के दरीचे, तह गया ||3

आज तक हमने बसाया जो शहर |
दौर मुफलिस गर्दिशों में ढह गया ||4

ओम् ने चाही सभी को रोशनी |
घर हमारे क्यों अँधेरा रह गया ||5